2. 'लोभ और प्रीति' निबंध के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए। (15)

अथवा

'बसंत आ गया' निबंध के कथ्य को स्पष्ट कीजिए।

3. 'प्रेमचंद के साथ दो दिन' संस्मरण का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

'ठकुरी बाबा' संस्मरण की मुख्य पात्र 'भक्तिन' का चरित्र-चित्रण कीजिए।

4. रेडियो नाटक के तत्वों के आधार पर 'वैष्णव जन' ध्वनि रूपक पर विचार कीजिए। (15)

RAMANUJAN COLLEGE LIBRARY
Kalkaji, New Delhi-110019

अथवा

'शायद' एकांकी का सार लिखिए।

5. 'अंगद का पांव' व्यंग्य की प्रासंगिकता स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

'ठेले पर हिमालय' यात्रावृत की भाषा शैली पर प्रकाश डालिए।

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 7320 **J**

Unique Paper Code : 2052202401

Name of the Paper : अन्य गद्य विधाएँ

Name of the Course : **B.A. (Prog.) Hindi – DSC**

Semester : IV

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. निम्नलिखित अंशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए- (10+10+10=30)

(क) किसी स्त्री या पुरुष के रूप की प्रशंसा सुनते ही पहला भाव लोभ का होगा। किसी को हमने बहुत सुंदर देखा और लुभा गए; उसके पीछे दूसरे को उससे भी सुंदर देखा तो उस पर लुभा गए। जब तक प्रवृत्ति का यह व्यभिचार रहेगा, तब तक हम रूपलोभी ही

माने जाएँगे। जब हमारा लोभ किसी एक ही व्यक्ति पर स्थिर हो जाएगा, हमारी वृत्ति एकनिष्ठ हो जाएगी, तब हम प्रेमी कहे जाने के अधिकारी होंगे। पर साधारणत: मन की ललक यदि वस्तु के प्रति होती है तो लोभ:, और किसी प्राणी या मनुष्य के प्रति होती है तो प्रीति कहलाती है।

अथवा

एक मित्र ने उसी स्थान में एक मल्लिका का गुल्म भी लगा रखा है, जो किसी प्रकार बस जी रहा है। दो करबीर और एक कोविदार के झाड़ भी उन्हीं मित्र की कृपा के फल हैं, पर वे बुरी तरह चुप हैं। कहाँ भी उल्लास नहीं, उमंग नहीं और उधर कवियों की दुनिया में हल्ला हो गया, प्रकृति रानी नया शृंगार कर रही है, और फिर जाने क्या क्या। कवि के आश्रम में रहता हूँ। नितांत ठूँठ-नहीं हूँ; पर भाग्य प्रसन्न न हो तो कोई क्या करे?

(ख) लखनऊ के आठ वर्ष पुराने प्रेमचन्दजी और काशी के प्रेमचन्दजी की रूपरेखा में विशेष अंतर नहीं पड़ा। हाँ मूँछों के बाल जरूर 53 फीसदी सफेद हो गए हैं। उम्र भी करीब करीब इतनी ही है। परमात्मा उन्हें शतायु करे, क्योंकि हिंदी वाले उन्हीं की बदौलत आज दूसरी भाषा वालों के सामने मूँछों पर ताव दे सकते हैं।

अथवा

मेरे चारों ओर न जाने कितने जंगली पेड़ पौधे, पक्षी आदि मेरे सामान्य जीवन प्रेम के कारण ही पनपते जीते रहते हैं। जिसका दूध लग जाने से आँख फूट जाती है, वह थूहर भी मेरे सयन लगाये आम के पार्थ में गर्व से सिर उठाये खड़ा रहता है। धंसकर न निकलने वाले कांटों से जड़ा हुआ भटकटैया-, सुनहले रेशम के लच्छों में ढके और उजले कोमल मोतियों से जड़े मक्का के भुट्टे के निकट साधिकार आसन जमा लेता है।

(ग) वैष्णव जन वह है जो पैर दुख भंजक होता है। फिर भी निरभिमानी रहता है गांधी जी से अधिक दूसरे के दुख दर्द को समझने वाला कौन है। हम उन्हें राष्ट्रपिता कहते हैं। मानते हैं, उन्होंने देश को स्वाधीन कराया। परंतु उनका लक्ष्य था मनुष्य के दुख दर्द को दूर करना। स्वाधीनता तो लक्ष्य को पाने का साधन-मात्र थी।

अथवा

सामान रखा जा चुका था, टिकट खरीदा ही जा चुका था। मालाएँ डाली ही जा चुकी थीं। हाथ या गत्ते या दोनों मिल ही चुके थे और गाड़ी चलने का नाम तक न लेती थी। थियेटर में जब हीरो पर बार करने के लिए विलेन खंजर तान कर तिरछा खड़ा हो जाता है उस वक्त परदे की डोरी अटक जाए तो सोचिए क्या होगा? कुछ वैसी ही हालत थी। परदा नहीं गिर रहा था।